

डॉ. डेव मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट साहित्य, व्याख्यान 7, मैथ्यू का परिचय

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

मैं डॉ. डेविड मैथ्यूसन न्यू टेस्टामेंट हिस्ट्री एंड लिटरेचर, लेक्चर 7, द इंटीडक्शन टू मैथ्यू प्रस्तुत कर रहा हूँ।

ठीक है, चलो आगे बढ़ें और आगे बढ़ें। स्वागत। मैं आज जो करना चाहता हूँ वह अंततः विशिष्ट नए नियम के पाठ में शामिल होना शुरू करना है और हम मैथ्यू से रहस्योद्घाटन के माध्यम से शुरू होने वाले विहित क्रम का पालन करेंगे। हम उस क्रम का पालन नहीं करेंगे जिसमें वे लिखे गए हैं, बल्कि उस क्रम का पालन करेंगे जिसमें वे नए नियम में घटित होते हैं।

तो, हम आज मैथ्यू को देखकर शुरुआत करेंगे, और ऐसा करने से पहले, आइए प्रार्थना के साथ शुरुआत करें।

पिता, हम आपके शब्दों को सुनने के लिए आपके सामने खड़े हैं क्योंकि हम अपने दिमाग से इसका विश्लेषण करते हैं, मैं प्रार्थना करता हूँ कि भगवान हम आपको इसके माध्यम से हमसे बात करते हुए सुनते रहेंगे, यह पहचानते हुए कि हमारे पास जो कुछ है वह एक दस्तावेज है जो तैयार किया गया है और इसकी आवश्यकता है इसके मूल ऐतिहासिक संदर्भ के प्रकाश में समझा जाना चाहिए, फिर भी यह एक दस्तावेज़ है जो आज भी आपके लोगों के लिए ईश्वर के वचन के रूप में कार्य कर रहा है। तो, इसे ध्यान में रखते हुए, हम वह सब लाते हैं जो हम हैं, हमारी सोचने की क्षमताएं, और हमारी विश्लेषणात्मक क्षमताएं, लेकिन साथ ही, हम पाठ को आपके शब्द के रूप में सुनने की इच्छा रखते हैं। और मैं प्रार्थना करता हूँ कि आज हम इसका थोड़ा-सा अर्थ समझ सकेंगे। यीशु के नाम पर, हम प्रार्थना करते हैं, आमीन।

ठीक है, इससे पहले कि हम विशिष्ट गॉस्पेल और विशेष रूप से मैथ्यू के गॉस्पेल को देखें, जैसा कि हमने कहा, यह समझना महत्वपूर्ण है कि नए टेस्टामेंट को पढ़ने में, नए टेस्टामेंट को सुनने और पढ़ने के लिए प्राथमिक पृष्ठभूमि, या हम कह सकते हैं कि अग्रभूमि, निस्संदेह पुराना नियम है। नया नियम, नए शब्द के बावजूद, ऐसा कुछ नहीं है जो पुराने नियम से अलग है, लेकिन हमने पहले सेमेस्टर में कहा था, कि नया नियम पुराने के संबंध में है, न कि किसी श्रेष्ठ चीज़ के रूप में, न कि किसी बिल्कुल नई चीज़ के रूप में या पहले अनसुना, लेकिन यह वादे और पूर्ति के रूप में पुराने के संबंध में खड़ा है।

नए नियम को पुराने नियम में शुरू हुई कहानी के चरमोत्कर्ष और पूर्ति के रूप में देखा जाना चाहिए। तो, ऐसा नहीं है कि पुराने नियम की कहानी अपनी गति से चलती रही और वह खत्म हो गई, और फिर भगवान ने यीशु मसीह और चर्च और उसके प्रेरितों वगैरह के इर्द-गिर्द केंद्रित एक नई कहानी बताना शुरू कर दिया, बल्कि इसके बजाय, नया नियम बस एक कहानी है पुराने नियम में शुरू हुई कहानी के अंतिम अध्याय की निरंतरता। इसलिए, शायद कहानी का एक

बहुत ही दर्दनाक संक्षिप्त सारांश होना महत्वपूर्ण है, मुझे विश्वास है कि विशेष रूप से मैथ्यू ने अपना सुसमाचार लिखते समय इसे ग्रहण किया होगा।

तो, पुराने नियम के आधार पर उन्होंने स्वयं को कौन सी कहानी सुनाई होगी? कहानी का पहला भाग यह है कि पाप के कारण इस्राएल अभी भी निर्वासन में है। यदि आप अपने पुराने नियम के सर्वेक्षण को याद करते हैं, तो पाप और मूर्तिपूजा के कारण, भगवान ने राष्ट्रों को, मुख्य रूप से अशूरियों और बेबीलोनियों को, आने और इज़राइल, भगवान के लोगों को ले जाने और उनके पापों की सजा के रूप में निर्वासन में भेजने की अनुमति दी। और यद्यपि वे भौतिक रूप से भूमि पर लौट आए, फिर भी कम से कम कई यहूदी ऐसे थे जो स्वयं को अभी भी निर्वासन में मानते थे।

और रोमन साम्राज्य द्वारा सब कुछ फिर से अपने कब्जे में लेने के बाद अब यह और भी अधिक प्रमुख हो गया होगा। याद रखें, अब हम न्यू टेस्टामेंट में जो कुछ भी पढ़ते हैं वह रोमन शासन के संदर्भ में लिखा गया है। रोमन हर चीज़ पर शासन करते हैं।

वे विश्व शक्ति हैं. और इसलिए अधिकांश इस्राएलियों ने स्वयं को पुराने नियम पर आधारित एक कहानी सुनाई होगी कि वे अभी भी निर्वासन में थे, पापों के कारण उससे मुक्ति की प्रतीक्षा कर रहे थे। कहानी का दूसरा भाग यह है कि यद्यपि इज़राइल निर्वासन में है, भगवान एक दिन जल्द ही चीजों को ठीक करने, सब कुछ ठीक करने, अपने लोगों, इज़राइल को बचाने और उन्हें मुक्त करने के लिए हस्तक्षेप करेंगे।

अर्थात्, ईश्वर अपने वादे निभाएगा, लंबे समय से प्रतीक्षित वादे जो उसने इब्राहीम से किए थे, जो उसने डेविड से किए थे, जो वादे भविष्यवक्ताओं ने पुराने नियम से दोहराए थे, वे सभी एक दिन पूरे होंगे जब ईश्वर ने हस्तक्षेप किया। चीज़ें सही हैं, न केवल इज़राइल के बीच बल्कि पूरे ब्रह्मांड के बीच। और अंततः, इस तरह, भगवान अंततः पूरी दुनिया को मुक्ति भी दिलाएंगे। तो, यह परमेश्वर के लोगों के रूप में इसराइल की बहाली के माध्यम से था, जो परमेश्वर द्वारा इब्राहीम से किए गए वादे के अनुरूप था, याद रखें कि परमेश्वर ने इब्राहीम से क्या कहा था, मैं तुम्हें आशीर्वाद दूंगा और मैं तुम्हें आशीर्वाद दूंगा, और अंततः पृथ्वी के सभी राष्ट्रों को तुम्हारे द्वारा आशीष पाऊंगा।

तो, परमेश्वर के लोग, इस्राएल की पुनर्स्थापना के माध्यम से, मुक्ति पूरी पृथ्वी पर फैल सकती है। और इसलिए, यह वह कहानी थी जो पूरी होने की प्रतीक्षा कर रही थी। चारों सुसमाचारों में जो समानता है वह यह है कि वे पाते हैं कि इस कहानी का निष्कर्ष और इस कहानी की पूर्ति यीशु मसीह के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान में होती है।

तो, आइए पहले सुसमाचार से शुरू करें, एक कर संग्रहकर्ता का सुसमाचार। तो, सबसे पहले, मैथ्यू के लेखक कौन हैं? मैं मैथ्यू के लेखकत्व के बारे में जो कहना चाहता हूँ वह सभी चार गॉस्पेल से संबंधित है, और वह यह है कि जब आप अपनी अंग्रेजी बाइबिल खोलते हैं और आपको शीर्षक मिलते हैं, मैथ्यू के अनुसार गॉस्पेल और मार्क के अनुसार गॉस्पेल, ल्यूक के अनुसार गॉस्पेल। , मैथ्यू, मार्क और ल्यूक ने मूल रूप से इसे नहीं लिखा था। आमतौर पर गॉस्पेल गुमनाम होते थे, यानी कोई कथा गुमनाम होती थी।

आपके पास पाठ में कहीं भी इसे लिखने वाले व्यक्ति का नाम नहीं था, जैसा कि आप पॉल के पत्रों के साथ करते हैं जहां वह अपनी पहचान बताता है। लेकिन गॉस्पेल तकनीकी रूप से गुमनाम थे। उनमें लेखक का नाम शामिल नहीं था।

तो वे शीर्षक, मार्क के अनुसार, मैथ्यू के अनुसार, जॉन के अनुसार गॉस्पेल, और ल्यूक के अनुसार गॉस्पेल, वास्तव में चर्च द्वारा बाद में जोड़े गए थे। जैसे ही चर्च ने इन गॉस्पेल को एक साथ इकट्ठा किया और उन्हें धर्मग्रंथ के रूप में, कैनन के रूप में, एक विहित धर्मग्रंथ के रूप में मान्यता दी, उन्होंने इन शीर्षकों को गॉस्पेल, मैथ्यू, मार्क, ल्यूक और जॉन के लिए जिम्मेदार ठहराया। हालाँकि, विस्तार में गए बिना, इसका मतलब यह नहीं है कि वे अविश्वसनीय हैं।

लेखक कौन थे, इसके विश्वसनीय संकेतक के रूप में इन शीर्षकों पर भरोसा करने का बहुत अच्छा कारण है। इनमें से अधिकांश शीर्षक गॉस्पेल से बहुत पहले ही जुड़े हुए थे। ऐसा नहीं है कि तीन, चार, पांच, छह सौ साल बाद वे जुड़ गये।

वे वास्तव में चर्च के पिताओं के बारे में हमारे पास मौजूद कुछ शुरुआती साक्ष्यों में बहुत पहले ही जुड़े हुए थे। वे इस सुसमाचार का श्रेय मैथ्यू को या सुसमाचार को मार्क को देते हैं। हम पहले ही कह चुके हैं कि मार्क, परंपरा यह है कि मार्क को पीटर के सुसमाचार के व्याख्याकार के रूप में जाना जाता था।

और इसलिए, मार्क का सुसमाचार पीटर की शिक्षा और पीटर के उपदेश का प्रतिबिंब है। इसलिए, मैं बस आपको यह बताना चाहता हूँ कि आपके गॉस्पेल में जो शीर्षक हैं, वे गॉस्पेल लेखकों द्वारा नहीं लिखे गए थे। इसके बजाय, बाद में चर्च द्वारा उन्हें गॉस्पेल के लिए जिम्मेदार ठहराया गया।

लेकिन उन सटीक विवरणों को गंभीरता से लेने का अच्छा कारण है कि वह कौन था जिसने सुसमाचार लिखा था। मैथ्यू, जैसा कि शीर्षक से पता चलता है, मैथ्यू, आपने वास्तव में सुसमाचार में उसके बारे में पढ़ा है, मैथ्यू एक कर संग्रहकर्ता था जिसे यीशु ने अपने शिष्यों में से एक, अपने अनुयायियों में से एक बनने के लिए बुलाया था। अब जब हम मैथ्यू पढ़ते हैं, तो यह मैथ्यू की प्रमुख विशेषताओं में से एक है, और मेरा इरादा सभी सुसमाचारों या सभी लेखों के साथ इस बारे में बात करने का नहीं है।

मैं केवल किसी पुस्तक की रूपरेखा तैयार करने के लिए रूपरेखा में रुचि नहीं रखता हूँ। कभी-कभी वे हमें प्रत्येक अनुभाग की सामग्री का सारांश प्राप्त करने में मदद करते हैं। लेकिन रूपरेखा के बारे में मेरे लिए मुख्य बात यह है कि जब वे आपको पुस्तक की संरचना और विकास के बारे में संकेत देते हैं।

जिस तरह से पुस्तक को एक साथ रखा गया है और जिस तरह से यह विकसित हुई है, उसके बारे में एक रूपरेखा क्या कहती है? मैथ्यू की प्रमुख संरचनात्मक विशेषताओं में से एक यह है कि मैथ्यू, अन्य गॉस्पेल के विपरीत, और फिर, जब हम चार गॉस्पेल से गुजरते हैं तो हम क्या करना चाहते हैं, मुझे मुख्य रूप से यह देखने में दिलचस्पी है कि प्रत्येक के बारे में क्या विशिष्ट और

अद्वितीय है सुसमाचार। और इससे मेरा मतलब यह नहीं है कि यही एकमात्र महत्वपूर्ण चीज़ है, जो अद्वितीय है। लेकिन मैथ्यू, मार्क, ल्यूक और जॉन को देखने का एक तरीका इस बात पर ध्यान केंद्रित करना है कि उनके पास क्या है जो उन्हें एक दूसरे से अलग करता है।

इसलिए, जब हम मैथ्यू के माध्यम से काम करते हैं, तो हम जानना चाहते हैं कि मैथ्यू में क्या शामिल है जो अलग है या उसके पास क्या है जिस पर वह जोर देता है जो अन्य तीन सुसमाचारों में नहीं है या कम से कम मैथ्यू के समान हद तक नहीं है। अनोखी विशेषताओं में से एक वह तरीका है जिस तरह मैथ्यू ने अपने सुसमाचार को एक साथ रखा है। अर्थात्, मैथ्यू की योजना में, मैथ्यू ने अपनी सामग्री को इस तरह से एक साथ रखा है जो यीशु की शिक्षाओं के पांच मुख्य प्रवचनों या पांच मुख्य खंडों पर जोर देता है।

और वे इस तरह दिखते हैं. प्रवचन का पहला खंड, पहला मुख्य, यदि आपके पास लाल अक्षर वाली बाइबिल है, तो इन सभी खंड लाल अक्षरों में होंगे। मैं अभी इस बारे में बात नहीं करूंगा कि मैं लाल अक्षर जोड़ने के बारे में क्या सोचता हूँ।

आप मुझसे बाद में पूछ सकते हैं. लेकिन ये इस तथ्य का प्रतिनिधित्व करने के लिए हैं कि मैथ्यू, अन्य गॉस्पेल के विपरीत, मैथ्यू यीशु को पांच अवसरों पर प्रवचन के लंबे खंडों को पढ़ाने के रूप में प्रस्तुत करता प्रतीत होता है। पहला तो आप भली-भांति जानते हैं, पहाड़ी उपदेश।

अध्याय 13 में दूसरा दृष्टांतों की एक लंबी श्रृंखला है जिसे यीशु ने यह समझाने के लिए सिखाया था कि यीशु परमेश्वर के राज्य को क्या सिखाते हैं, इसका क्या मतलब है? और यदि यीशु परमेश्वर के राज्य की शिक्षा दे रहे हैं, तो रोमन क्यों हैं, सीज़र अभी भी सिंहासन पर क्यों है? रोमन अभी भी नियंत्रण में क्यों हैं? यीशु दृष्टांतों की एक श्रृंखला बताते हैं जो उस प्रश्न का उत्तर देते हैं। और फिर अंतिम अध्याय पर जाएं, अध्याय 23 से 25 में अंतिम और पांचवां अंत समय के बारे में यीशु की शिक्षा है जब मसीह इसराइल का न्याय करने, राष्ट्रों का न्याय करने, अपना राज्य स्थापित करने के लिए वापस आएगा जिसे अक्सर जाना जाता है ओलिवेट प्रवचन या युगांतशास्त्रीय प्रवचन। लेकिन दुनिया का न्याय करने और अपने अनुयायियों को मुक्ति प्रदान करने के लिए यीशु की वापसी पर एक लंबी शिक्षा।

और दृष्टांतों की एक श्रृंखला है, आप शायद भेड़ और बकरियों के दृष्टांत को जानते होंगे। वह दृष्टान्त शिक्षण के इस खंड में घटित होता है। तो, मैथ्यू ने शिक्षण के पाँच खंडों के अनुसार अपना सुसमाचार स्थापित किया।

और जब आप मैथ्यू पढ़ते हैं तो इन पांचों में से प्रत्येक के अंत में क्या होता है, एक बात जो इंगित करती है कि मैथ्यू ने जानबूझकर ऐसा किया है, मैथ्यू यह कहकर समाप्त होता है कि जब यीशु ने ये बातें समाप्त कीं, या जब यीशु ने ये बातें कहनी समाप्त कर लीं। और फिर मैथ्यू दूसरे खंड में प्रवेश करेगा और अंततः एक और लंबा प्रवचन शामिल करेगा। और फिर अध्याय 10 के अंत में, जब यीशु ने ये बातें कहनी समाप्त कीं।

और फिर शिक्षण का एक और खंड, प्रवचन का एक और खंड, और जब यीशु ने ये बातें कहनी समाप्त कर दीं। इसलिए, मैथ्यू स्पष्ट रूप से प्रवचन के लंबे खंडों में पांच अवसरों पर यीशु को शिक्षण के रूप में प्रस्तुत करना चाहता है। ऐसा क्यों है इसके बारे में विभिन्न सुझाव आये हैं।

एक व्यक्ति ने कहा कि प्रवचनों के ये पाँच खंड यीशु को मूसा की तरह एक नया कानून सिखाने या प्रस्तुत करने का प्रतिनिधित्व करते हैं। बाइबल की पहली पाँच पुस्तकों को याद करें, आशा है, आपको पेंटाटेच शब्द याद होगा, यह शब्द पुराने नियम की पहली पाँच पुस्तकों, उत्पत्ति, निर्गमन, लैविकस, संख्याएँ और व्यवस्थाविवरण को संदर्भित करता है। कुछ लोग सुझाव देंगे कि ये पाँच खंड यीशु को मूसा की तरह कानून के नए लाने वाले के रूप में चित्रित करने के लिए हैं।

जिस प्रकार हमारे पास मूसा की पाँच पुस्तकें हैं, उसी प्रकार अब हमारे पास यीशु की पाँच शिक्षाएँ हैं। यह संभवतः बिल्कुल सही नहीं है। मुझे नहीं पता कि क्या मैथ्यू यीशु को मूसा की तरह एक नए कानून के नए दाता के रूप में पेश करने की कोशिश कर रहा है।

मुझे लगता है कि वह ऐसा करता है, जैसा कि हम देखेंगे, वह यीशु को मूसा की तरह प्रस्तुत करता है। लेकिन कम से कम, हम यह कह सकते हैं कि मैथ्यू का इरादा यीशु को एक शिक्षक के रूप में प्रस्तुत करने का है, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो प्रवचन के इन पांच खंडों में यीशु को शिक्षण के रूप में प्रस्तुत करके सिखाने और निर्देश देने के लिए आता है। और फिर, आप जॉन में पाएंगे, जॉन के पास भी यीशु की लंबी शिक्षाएँ हैं, लेकिन अन्य सुसमाचारों में से कोई भी प्रवचन के इन मुख्य पांच खंडों, यीशु की इन लंबी शिक्षाओं की तर्ज पर संरचित नहीं है।

तो यह मैथ्यू की पुस्तक की एक प्रमुख विशेषता है। जब हम स्वयं मैथ्यू के पाठ को देखना शुरू करते हैं, जब हम मैथ्यू की पुस्तक को देखना शुरू करते हैं, और फिर हम बाद में वापस विस्तार करेंगे और पूछेंगे, आखिर मैथ्यू ने यह सुसमाचार क्यों लिखा? फिर, क्या मैथ्यू ने एक दिन बैठकर निर्णय लिया कि उसे ईसा मसीह का जीवन या ऐसा कुछ लिखने की ज़रूरत है जिसे कॉलेज में 21वीं सदी के छात्र न्यू टेस्टामेंट सर्वे में पढ़ सकें, या शायद कोई विशेष कारण था, या मैथ्यू ने ऐसा क्यों महसूस किया? यह सुसमाचार लिखना आवश्यक है? कुछ विवरणों पर गौर करने के बाद मैं इसके बारे में कुछ सुझाव दूंगा। लेकिन सबसे पहले, मैथ्यू की पहली कविता को देखें क्योंकि यह वास्तव में हमें इस बारे में काफी कुछ बताती है कि वह क्या करने का इरादा रखता है, और वह पूरी कहानी का उत्तर कैसे देता है।

उस कहानी को याद रखें जो लोग खुद को बता रहे होंगे, इज़राइल अभी भी पाप के कारण निर्वासन में है, लेकिन भगवान एक दिन दुनिया को सही करने के लिए हस्तक्षेप करेंगे, मुख्य रूप से अपने लोगों इज़राइल को बचाकर, इब्राहीम, डेविड, अपने सभी वादों को पूरा करके इज़राइल के साथ वाचा का वादा है कि भगवान चीजों को सही कर देगा, और उसके माध्यम से, अंततः भगवान पूरी दुनिया को बचाएगा। अब मैथ्यू इसका उत्तर कैसे देता है? अध्याय 1 और श्लोक 1 से आरंभ करते हुए, इब्राहीम के पुत्र, दाऊद के पुत्र, मसीहा यीशु की वंशावली का विवरण। वह परिचय कम से कम दो कारणों से महत्वपूर्ण है।

नंबर एक मैथ्यू यह बताता है कि उसकी ग्रीको-रोमन जीवनी किस बारे में होने वाली है। यह यीशु मसीह, मसीहा के बारे में होगा। मसीहा शब्द, जैसा कि आप जानते हैं, मसीहा शब्द उस वादे पर आधारित है जो परमेश्वर ने डेविड से किया था।

भगवान ने डेविड से वादा किया था कि एक राजा होगा जो सिंहासन पर बैठेगा और इसराइल पर शासन करेगा, डेविड का एक बेटा आएगा, और पुराने नियम में, 2 सैमुअल में, भगवान ने वादा किया था कि डेविड के राज्य का कोई अंत नहीं होगा। सिंहासन पर हमेशा कोई न कोई बैठा रहता था और यशायाह, यिर्मयाह और यहजेकेल जैसे भविष्यवक्ताओं ने इसे चुना था। उन्होंने उस समय को समझा जब परमेश्वर अपने लोगों को छुड़ाने के लिए वापस आएगा, और इसमें सिंहासन पर बैठे दाऊद के वंश में एक पुत्र भी शामिल होगा।

अब जब मैथ्यू ने कहा कि यह मसीहा के बारे में एक किताब है, तो वह तुरंत अपनी किताब को आने वाले मसीहा राजा के पुराने नियम के वादों से जोड़ता है, जो अब इज़राइल पर शासन करेगा। अब जिस समस्या पर हमें थोड़ा बाद में गौर करना होगा, समस्या यह है कि वह कैसे हो सकता है? सीज़र के सिंहासन पर रहते हुए ऐसा कैसे हो सकता है? ऐसा कैसे हो सकता है जब रोम हर चीज़ का प्रभारी है? यीशु, यह नाज़रेथ का यीशु, यह मसीहा, यह प्रतीक्षित राजा कैसे हो सकता है, इन पुराने नियम की अपेक्षाओं को पूरा करने में, जबकि वे वास्तविकता से विरोधाभासी लगती हैं? क्योंकि रोम नियंत्रण में है, और सीज़र उसके सिंहासन पर है। तो, यीशु मसीहा है, डेविड का पुत्र, और यह स्पष्ट रूप से इस व्यक्ति, यीशु मसीह को, आने वाले डेविडिक राजा के पुराने नियम के वादों से जोड़ता है।

फिर से, 2 शमूएल से शुरू करते हुए, परमेश्वर ने दाऊद से जो वादा किया था, कि उसके सिंहासन पर हमेशा एक बेटा बैठा रहेगा, उसका सिंहासन हमेशा के लिए भविष्यवक्ताओं के बीच रहेगा। आपको वह पाठ याद है जिसे हम क्रिसमस के समय उद्धृत करते हैं, एक बेटा पैदा होगा, उसका नाम शक्तिशाली भगवान, अद्भुत परामर्शदाता, आदि होगा, लेकिन यह आगे बढ़ता है और कहता है, कि वह डेविड के सिंहासन पर बैठेगा और राष्ट्रों पर शासन करेगा सदैव धार्मिकता में। इसलिए, भविष्यवक्ताओं ने एक ऐसे दिन की आशा की जब परमेश्वर के वादे, कि दाऊद के वंश में एक आने वाला राजा अंततः उभरेगा, और अब मैथ्यू के लेखक ने स्पष्ट रूप से संकेत दिया है कि यह यीशु अब उस प्रश्न का उत्तर या उन वादों की पूर्ति है।

लेकिन और भी बहुत कुछ है, न केवल वह डेविड का पुत्र है, पुराने नियम के डेविड वंश के राजा के वादों को पूरा करता है, बल्कि वह इब्राहीम का पुत्र भी है। अब यह महत्वपूर्ण क्यों है? मूसा का पुत्र, या इसहाक का पुत्र, या दानियेल का पुत्र, या यशायाह या यिर्मयाह का पुत्र क्यों नहीं? पुराने नियम में अन्य महत्वपूर्ण शख्सियतें भी हैं। इब्राहीम क्यों? मैथ्यू यह कहकर क्या इंगित करना चाहता है कि यीशु इब्राहीम का पुत्र है? तो क्या हुआ? या नूह क्यों नहीं? या एडम, जो बिल्कुल शुरुआत तक जा सकता था।

इब्राहीम क्यों? हम पुराने नियम में अब्राहम के बारे में क्या जानते हैं जो हमें यह समझने में मदद कर सकता है कि मैथ्यू यीशु को अब्राहम के पुत्र के रूप में क्यों प्रस्तुत करना चाहता है? परमेश्वर ने इब्राहीम के साथ एक वाचा बाँधी थी, और वह वाचा किस बारे में थी? आप बिल्कुल सही कह

रहे हैं. वह एक महान राष्ट्र होगा, इब्राहीम धन्य होगा, और उससे एक महान राष्ट्र उत्पन्न होगा, और आप सही हैं, वंशज आकाश के तारों और समुद्र की रेत से भी अधिक असंख्य होंगे। दूसरे शब्दों में, इस्राएली राष्ट्र इस एक व्यक्ति, इब्राहीम से उभरेगा।

लेकिन और भी बहुत कुछ है. इसके अलावा और क्या? मेरा मानना है कि विश्व में विस्तार करना ईश्वर का एक महान राष्ट्र बनना है जिसे स्वयं यीशु को राष्ट्र में सुधार लाने के लिए विश्व में फैलाना था। ठीक है, तो अंततः, आप बिल्कुल सही हैं, पृथ्वी के सभी राष्ट्र इब्राहीम के माध्यम से धन्य होंगे।

तो, इब्राहीम से उत्पत्ति 12 में वादा किया गया है, यहीं से इब्राहीम की वाचा शुरू होती है, जैसा कि आपने उल्लेख किया है। अध्याय 12 में, परमेश्वर ने वादा किया है कि इब्राहीम उसे एक महान राष्ट्र और एक बड़ा नाम बनाएगा, लेकिन अंततः, पृथ्वी के सभी राष्ट्र उसके माध्यम से धन्य होंगे। इसलिए, यीशु को इब्राहीम का पुत्र कहकर, न केवल यीशु यहूदियों के उद्धार का उत्तर है, बल्कि हमारी कहानी को याद रखें कि यहूदी अभी भी निर्वासन में हैं और वे उस समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं जब भगवान चीजों को सही करने के लिए हस्तक्षेप करेंगे और लोगों को बचाएं।

न केवल यीशु मसीह इसका उत्तर देंगे और उनके पाप और निर्वासन की यहूदी समस्या का समाधान होंगे, बल्कि अब यीशु को इब्राहीम के साथ जोड़कर, यीशु वह साधन भी होंगे जिसके द्वारा मुक्ति पूरे विश्व तक फैल जाएगी। यदि मैथ्यू ने अभी कहा होता कि यीशु डेविड का पुत्र है, तो इसे आसानी से समझा जा सकता था, ठीक है, यहाँ यहूदी मसीहा अपने लोगों इज़राइल को बचाने के लिए आया है। लेकिन उसे इब्राहीम के साथ जोड़कर, यीशु अब वह है जो न केवल इज़राइल को बचाएगा, वह पृथ्वी के सभी राष्ट्रों, अन्यजातियों को भी बचाएगा।

और एक चीज जो हम मैथ्यू के बारे में बहुत जल्द देखने जा रहे हैं वह यह है कि मैथ्यू किसी भी अन्य गॉस्पेल की तुलना में लगातार यीशु को केवल यहूदी निर्वाचन क्षेत्र ही नहीं, बल्कि अन्यजातियों को बचाने के रूप में चित्रित करता है। इसलिए, शेष कथा को समझने के लिए पहली कविता महत्वपूर्ण है, कि मैथ्यू यीशु को डेविड के पुत्र, राजा के रूप में चित्रित करना चाहता है, न केवल इज़राइल के लिए, न केवल इज़राइल के वादों को पूरा करने में, बल्कि उनकी पूर्ति में भी। इब्राहीम से किए गए वादे कि मुक्ति अंततः पृथ्वी के अंत तक, पृथ्वी के सभी राष्ट्रों तक जाएगी। इसलिए, यीशु न केवल यहूदियों के लिए, बल्कि अन्यजातियों के लिए भी मसीहा हैं।

अब जो वंशावली आती है, याद रखें श्लोक 1 से वंशावली का विवरण शुरू होता है। अब यदि आप मेरे जैसे हैं, तो आप स्वाभाविक रूप से इसे छोड़कर यह जानना चाहेंगे कि वास्तविक कथा कहाँ से शुरू होती है। लेकिन यह वंशावली कई कारणों से अत्यंत महत्वपूर्ण थी, मुख्य रूप से क्योंकि यह दर्शाती थी कि यीशु को कानूनी तौर पर डेविड के सिंहासन पर बैठने का अधिकार था।

वंशावली का प्रयास, इसका प्राथमिक कार्य यह प्रदर्शित करना है कि यीशु को जोसेफ के दत्तक कानूनी पुत्र के रूप में डेविड के सिंहासन पर बैठने का कानूनी अधिकार है, जो जैविक रूप से डेविड का वंशज था। तो, यीशु, हालाँकि वह शारीरिक रूप से नहीं था, जैसा कि हम मैथ्यू 1 और

2 में देखेंगे, यीशु शारीरिक रूप से यूसुफ का पुत्र नहीं था। मैरी जोसेफ के साथ सामान्य संबंधों से अलग होकर गर्भधारण करती है।

यीशु शारीरिक और जैविक रूप से जोसेफ का पुत्र नहीं है, लेकिन कानूनी तौर पर वह तब है जब जोसेफ ने उसका नाम रखा। और इसलिए कानूनी तौर पर, यीशु को दाऊद के वंश में, दाऊद के पुत्र के रूप में दाऊद के सिंहासन पर बैठने का अधिकार है। और इसलिए, यह वंशावली अत्यंत महत्वपूर्ण है।

यहां तक कि जिस तरह से इसकी संरचना की गई है, वंशावली 14 पीढ़ियों के तीन खंडों में विभाजित है। अब यह हमारे लिए महत्वपूर्ण नहीं लग सकता है, लेकिन जैसा कि मैं समझता हूं, संख्या 14 वास्तव में डेविड नाम के लिए हिब्रू अक्षरों की संख्या है। तो फिर, मैथ्यू बहुत ही कलात्मक ढंग से यह दिखाने के लिए एक मामला बना रहा है कि यीशु सच्चा मसीहा राजा है, डेविड का पुत्र है।

लेकिन केवल यहूदियों के लिए ही नहीं, इब्राहीम के माध्यम से, वह अन्यजातियों के लिए भी मसीहा है। इसलिए, डेविड के सिंहासन पर बैठने का यीशु का अधिकार स्थापित करने में वंशावली बहुत महत्वपूर्ण है। जैसा कि मैंने कहा, मैथ्यू की सबसे विशिष्ट विशेषताओं में से एक गैर-यहूदी जोर है।

हम इसे बस एक क्षण में देखेंगे। लेकिन मेरे कहने का मतलब यह है कि ऐसे कई स्थान हैं जहां मैथ्यू में अन्यजातियों द्वारा यीशु को जवाब देने के संदर्भ शामिल हैं जो आपको अन्य सुसमाचारों में नहीं मिलते हैं। और हम उनमें से कुछ प्रश्नों पर गौर करेंगे।

हाँ, यह एक संक्षिप्त सूची हो सकती है। ऐसा सोचने की कोई बात नहीं है, आप जानते हैं, मैथ्यू को प्रत्येक अंतिम व्यक्ति को शामिल करना था। हो सकता है कि उसने जानबूझकर डेविड पर जोर देने के लिए तीन संख्याओं, तीन 14 पर फिर से जोर देने के लिए इस तरह से संरचना की हो।

वंशावली में वनवास के उल्लेख पर भी गौर करें। तो, यीशु निर्वासन को समाप्त करने के लिए आये हैं। इजराइल खुद जो कहानियां सुना रहा था वो सभी अब अपनी पूर्णता और अपने अंजाम तक पहुंच रही हैं।

उदाहरण के लिए, हम एक विशिष्ट उदाहरण देखेंगे कि कैसे यीशु के प्रति प्रतिक्रिया देने वाले अन्यजातियों को मैथ्यू में इस तरह से शामिल किया गया है, जो आपको कहीं और नहीं मिलेगा। लेकिन ये काफी दिलचस्प कहानी है. मैथ्यू अध्याय में, मुझे लगता है कि यह अध्याय 8 है जो मैं चाहता हूँ।

मैथ्यू अध्याय 8 या, यहां अध्याय 8 में, एक बहुत ही सामान्य यहूदी रूपक है कि जब भगवान आएंगे और अपने लोगों को बहाल करेंगे और अपने लोगों को बचाएंगे तो क्या होगा, यह एक भोज था। अर्थात्, भोजन करने या भोज करने की कल्पना इस बात के लिए एक सामान्य रूपक थी कि जब परमेश्वर अपने लोगों से मिलेंगे, उन्हें पुनर्स्थापित करेंगे, और मोक्ष प्रदान करेंगे तो क्या

होगा। और यीशु की शिक्षाओं में से एक में ध्यान दें, ध्यान दें कि वह भोज की इस छवि के साथ क्या करता है।

वह कहता है, यीशु ने उसे सुना, और चकित हुआ, और अपने पीछे आनेवालोंसे कहा, तो यीशु जो कहता है, वह यह है, मैं तुम से सच कहता हूँ, कि मैं ने इस्राएल में किसी में ऐसा विश्वास नहीं पाया। मैं तुम से कहता हूँ, कि पूर्व और पश्चिम से बहुतेरे आएंगे, और इब्राहीम, इसहाक, और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में भोजन करेंगे। अब पूर्व और पश्चिम से आने वाला यह विचार, मूल रूप से यीशु कह रहा है कि न केवल यहूदी बल्कि अन्यजाति भी इब्राहीम, इसहाक और जैकब के साथ मेज पर बैठेंगे।

पहली शताब्दी में किसी यहूदी के लिए यह अकल्पनीय रहा होगा। यह भोज, अपने लोगों को बहाल करने वाले ईश्वर के भविष्य के प्रतिनिधि में यह भोज, यह अकल्पनीय रहा होगा कि यहूदियों के अलावा कोई और इब्राहीम, इसहाक और जैकब के साथ मेज पर बैठेगा। अब यीशु एक ऐसे समय की कल्पना करते हैं जब अन्यजाति, पूर्व और पश्चिम के लोग, इस भोज में आएंगे, जिसे अधिकांश यहूदियों ने महसूस किया होगा कि यह उनके लिए आरक्षित है।

और अब यह भोज, भविष्य में अपने लोगों को बचाने और अपना राज्य स्थापित करने के लिए आने वाले ईश्वर के लिए एक प्रकार का रूपक है। यह अकल्पनीय था कि यहूदियों के अलावा कोई भी उसमें भाग लेगा। लेकिन अब यीशु के पास अन्यजाति इब्राहीम, इसहाक और याकूब के साथ मेज पर बैठे हैं।

फिर, यह कुछ ऐसा है जो आपको अन्य सुसमाचारों में नहीं मिलता है। ऐसा कुछ जिस पर मैथ्यू ज़ोर देना चाहता है। और ऐसा पूरे सुसमाचार में कई बार होता है।

आप पाते हैं, मैथ्यू का सुसमाचार कैसे समाप्त होता है? इसका अंत यीशु के यह कहने से होता है, स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए, जाओ और सभी यहूदियों या इस्राएलियों को नहीं, बल्कि सभी राष्ट्रों को शिष्य बनाओ। उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा देना।

उन्हें वह सब करना सिखाना जो मैं आज्ञा देता हूँ। इसलिए, सुसमाचार संपूर्ण राष्ट्रों में सुसमाचार प्रचार करने के आह्वान के साथ समाप्त होता है। अर्थात्, यह आने वाला राजा, यह मसीहा, यह यीशु दाऊद की पंक्ति में न केवल यहूदियों के लिए, बल्कि अन्यजातियों के लिए भी मुक्ति और बचाव प्रदान करने के लिए है।

इसलिए, मैथ्यू का सुसमाचार केवल इज़राइल ही नहीं, बल्कि सभी देशों में इस सुसमाचार का प्रचार करने के आह्वान के साथ समाप्त होता है। लेकिन गैर-यहूदी समावेशन के सबसे दिलचस्प उदाहरणों में से एक, साथ ही कुछ अन्य चीजें, अध्याय 2 में बुद्धिमान लोगों, या जादूगरों, जो यीशु से मिलने आए थे, का वर्णन है। अब, हमने क्रिसमस की कहानी के संबंध में इस पर थोड़ा ध्यान दिया, लेकिन फिर, यह एक ऐसी विशेषता है जो अन्य सुसमाचारों में से किसी में नहीं है।

केवल मैथ्यू और ल्यूक के पास यीशु के जन्म का रिकॉर्ड है, लेकिन ल्यूक के पास चरवाहे आए और यीशु से मिलने आए, और दिलचस्प बात यह है कि मैथ्यू के पास नहीं है। इसके बजाय, मैथ्यू ने बुद्धिमान लोगों, या जादूगरों को, आकर यीशु से मिलने के लिए कहा। ल्यूक उनके बारे में कुछ नहीं कहता।

अब, इसका मतलब यह नहीं है कि ल्यूक उनके बारे में नहीं जानता था, या मैथ्यू चरवाहों के बारे में नहीं जानता था। अधिक से अधिक, इसका मतलब यह था कि यह वास्तव में उनके उद्देश्यों के लिए प्रासंगिक नहीं था। याद रखें, सुसमाचार के लेखक चयनात्मक हैं।

कहा, उसका विस्तृत ब्यौरा नहीं दे रहे हैं। उनमें केवल वही जानकारी शामिल होती है जो उनके उद्देश्य को बताती है। तो, मैथ्यू में बुद्धिमान पुरुषों या जादूगरों की कहानी शामिल है।

उसने ऐसा क्यों किया? सबसे पहले, यह समझना महत्वपूर्ण है कि जादूगर कौन थे। जादूगरों को संभवतः फारस या बेबीलोन के ज्योतिषियों के रूप में समझा जाता था। अर्थात् उन्होंने तारों का अध्ययन किया।

इसमें कोई संदेह नहीं कि उन्हें पुराने नियम तक भी पहुंच प्राप्त होगी। और उसके संबंध में, फिर, स्पष्टीकरण है कि हम तारे को कैसे समझ सकते हैं। शायद किसी बिंदु पर, हम उस बारे में बात कर सकें।

लेकिन अब मेरा जोर इस बात पर रहेगा कि कहानी क्या कर रही है। तो, जादूगर इस तारे, इन ज्योतिषियों का अनुसरण करते हैं, और वे बेथलेहेम आते हैं, और वे यीशु की पूजा करते हैं। इसके बारे में महत्वपूर्ण बात यह है कि, मुख्य रूप से, ये जादूगर हैं, न केवल वे ज्योतिषी हैं, बल्कि वे विदेशी भी हैं। वे अन्यजाति हैं।

और आप कहानी में लगभग साज़िश या कॉमेडी देख सकते हैं। जब आपने यह तथ्य पढ़ा कि जादूगरों का पहला पड़ाव यरूशलेम शहर था। और जो आप नहीं जानते वह यह है कि बेथलेहम मूल रूप से यरूशलेम के पिछले दरवाजे के ठीक बाहर था।

यह एक बहुत ही महत्वहीन शहर था। और यह दिलचस्प है। मुझे लगता है कि इसमें जानबूझकर की गई कॉमेडी यह है कि ये बेबीलोनियाई ज्योतिषी बेथलेहम जाने के लिए एक लंबा सफर तय करते हैं और लंबे समय तक यात्रा करते हैं।

फिर भी, यह दिलचस्प है, कि हेरोदेस और यरूशलेम के अन्य लोग अपने पिछले दरवाजे से बाहर भी नहीं जाते हैं और बेथलेहम की छोटी दूरी तक नहीं जाते हैं। इसके बजाय, हेरोदेस, दिलचस्प बात यह है, बुद्धिमानों से कहता है, जाओ इस बच्चे को ढूंढो, और जब तुम उसे पाओ, तो मुझे वापस रिपोर्ट करो। हेरोदेस स्वयं क्यों नहीं जा सका? बेथलेहम पिछले दरवाजे से ठीक बाहर है।

फिर भी, ये विदेशी, अन्यजाति, यीशु से मिलने के लिए काफी समय तक काफी दूरी तय करते हैं। जब, फिर से, जो लोग बेहतर जानते थे, यहूदी नेताओं और हेरोदेस ने, यीशु की पूजा करने के

लिए बेथलेहम की छोटी दूरी तक जाने की जहमत भी नहीं उठाई। तो, फिर से, मैथ्यू शुरू होता है।

मैथ्यू अध्याय 2 यहूदियों, अन्यजातियों के बजाय अन्यजातियों की कहानी से शुरू होता है, जो आते हैं और यीशु की पूजा करते हैं। हालाँकि, इस कहानी में और भी बहुत कुछ चल रहा है। और, वास्तव में, मैं एक क्षण में अध्याय 3 और 4 को भी शामिल करना चाहता हूँ।

लेकिन, इस कहानी में और भी कुछ है जिसमें बुद्धिमान लोग यीशु से मिलने आ रहे हैं। लेकिन, इसके ठीक बाद क्या होता है... याद रखें, यीशु के जन्म के रिकॉर्ड के ठीक बाद, मैथ्यू अन्य लेखकों की तरह, सीधे यीशु के वयस्क मंत्रालय में कूद जाता है। वह हमें इस बारे में कुछ नहीं बताता कि यीशु के बीच क्या हुआ था... यीशु शायद 1 से 2 साल का है, या मैथ्यू 2 साल का है। लेकिन, फिर, अगले अध्याय में, यीशु एक वयस्क है।

इसलिए, सुसमाचार लेखक, फिर से, वे हमें यीशु द्वारा की गई और कही गई हर बात की विस्तृत जीवनी देने की कोशिश नहीं कर रहे हैं, बल्कि वे चयनात्मक हो रहे हैं। अब, आगे क्या होगा? दिलचस्प बात यह है कि यीशु... यीशु के बाद... बेथलेहम में उनके जन्म के बाद, आपको एक दिलचस्प घटना याद होगी क्योंकि हेरोदेस... हम वापस जाएंगे और उसके बारे में बात करेंगे। क्योंकि हेरोदेस बेथलेहम में यीशु और अन्य सभी बच्चों को मारने की कोशिश करता है, यीशु के माता-पिता मिस्र भाग जाते हैं और फिर, अंततः, वे वापस आ जाते हैं।

और फिर, अगली बात जो हम जानते हैं, यीशु अपने वयस्क मंत्रालय में कूद पड़ता है। और पहली चीज़ जो घटित होती है वह यह है कि यीशु को जॉर्डन नदी में बपतिस्मा दिया जाता है और फिर, अगली घटना, वह परीक्षा के लिए जंगल में चला जाता है। तो, यीशु का जन्म हुआ।

वह हेरोदेस से भाग गया। वह मिस्र जाता है। वह अपनी जान बचाने के लिए दौड़ता है।

वह मिस्र में संरक्षित है। वह मिस्र से बाहर आता है। फिर, वह अपना वयस्क मंत्रालय शुरू करता है।

उन्होंने जॉर्डन नदी में बपतिस्मा लिया। और फिर, वह परीक्षा में पड़ने के लिए जंगल में चला जाता है। अब, इस सब से हमें क्या लेना-देना? फिर, मैथ्यू क्या कर रहा है? सबसे पहले, मैं अध्याय 2 में आश्वस्त हूँ, और यह पुराने नियम की पृष्ठभूमि के तहत है, अध्याय 2 से अध्याय 4 तक, यीशु को नए इज़राइल के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

अब, अध्याय 4 में बपतिस्मा और यीशु के प्रलोभन में क्या दिलचस्प है, समानता पर ध्यान दें। क्या हुआ? दिलचस्प बात यह है कि पुराने नियम से नए नियम में एक आवर्ती कहानी चलती रहती है। इसकी शुरुआत आदम और हव्वा से होती है, जिन्हें प्रलोभन दिया गया और वे प्रलोभन के आगे झुक गए और उन्होंने बगीचे में पाप किया और उन्हें अदन के बगीचे से निर्वासित कर दिया गया।

अब, यीशु ने इज़राइल राष्ट्र को चुना। यह परमेश्वर द्वारा इब्राहीम से किये गये वादे पर जाता है। वह अपना वादा, इब्राहीम के साथ वाचा बांधता है, कि वह उसे एक महान राष्ट्र बनाएगा।

और वह राष्ट्र है इस्राएल। इसलिए, परमेश्वर इस्राएल राष्ट्र को चुनता है। आदम की तरह, वह आदम को अपने लोगों के रूप में चुनता है, आदम को अपने लोगों के रूप में बनाता है, और उनके साथ एक रिश्ते में प्रवेश करता है।

आदम की तरह, इज़राइल भगवान के लोग हैं। उनकी परीक्षा होती है, वे पाप करते हैं और वे अपने देश से निर्वासित भी किये जाते हैं। तो, यह एक तरह से स्ट्राइक टू है।

यदि आदम वह व्यक्ति बनने में असफल रहा जो परमेश्वर ने उसे बनाना चाहा था, अपने इरादे को पूरा करने के लिए, तो परमेश्वर ने अपनी रचना के इरादे को पूरा करने के लिए इज़राइल को चुना जिसे करने में आदम और हव्वा असफल रहे। लेकिन इज़राइल का प्रदर्शन कुछ भी बेहतर नहीं रहा। उन्होंने पाप किया और उन्हें भी निर्वासित कर दिया गया।

तो अब, यीशु साथ आते हैं। प्रलोभन में क्या चल रहा है? मैथ्यू अध्याय 4 में, जब यीशु को शैतान द्वारा प्रलोभित किया जाता है। मूलतः, जहाँ आदम और इस्राएल असफल हुए, अब यीशु की परीक्षा होती है, फिर भी वह परीक्षा में सफल हो जाता है।

वह पाप नहीं करता और हार नहीं मानता, परन्तु वह परीक्षा में उत्तीर्ण होता है। और इसलिए, वह वह है जो इज़राइल को लाने में सक्षम है, वह इज़राइल को मुक्ति दिलाने और सभी राष्ट्रों को मुक्ति दिलाने में सक्षम है। क्यों? क्योंकि वही वह है जो मानवता को उसकी असली नियति तक लाता है।

वह वह है जो मानवता को इस इरादे तक लाता है कि उत्पत्ति अध्याय 1 में भगवान ने इसे हमेशा के लिए बनाया है। इसलिए, यीशु के प्रलोभन को दर्ज करके, यह सिर्फ एक अच्छी कहानी नहीं है कि कैसे यीशु ने पाप नहीं किया और कैसे यीशु ने प्रलोभन का विरोध किया और हमें भी ऐसा ही करना चाहिए, लेकिन यह कैसे की कहानी है... फिर से, इस तथ्य पर विचार करें कि मैथ्यू, मैथ्यू का सुसमाचार, पुराने नियम में शुरू हुई कहानी का निष्कर्ष है। यीशु, वह चक्र जो आदम को प्रलोभित करने और पाप करने और निर्वासन से शुरू होता है, इस्राएल द्वारा प्रलोभित करने और पाप करने और निर्वासन से, यीशु आदम और इस्राएल की तरह प्रलोभित होकर चक्र को तोड़ता है, लेकिन उनके विपरीत, वह हार नहीं मानता है। इसलिए, यीशु योग्य है सच्चा बेटा बनने के लिए

आदम नहीं था, इज़राइल ने इसे उड़ा दिया, लेकिन यीशु ईश्वर का सच्चा पुत्र होने और इज़राइल और पृथ्वी के सभी राष्ट्रों के लिए मुक्ति प्रदान करने के योग्य हैं। तो, पुराने नियम की कहानी का पहला तत्व यह है कि यीशु को नए इज़राइल के रूप में चित्रित किया जा रहा है। वह इज़राइल की नियति को पूरा कर रहा है।

इस्राएल को सभी राष्ट्रों के लिए प्रकाश बनना चाहिए था। यह इस्राएल के माध्यम से था, उत्पत्ति 12, कि आशीर्वाद सभी राष्ट्रों को मिलेगा, फिर भी वे असफल रहे, उन्होंने पाप किया। अब, यीशु सच्चे इस्राएल के रूप में आते हैं, और वह परीक्षा से गुजरते हैं, और यह उनके माध्यम से है कि अब आशीर्वाद आएगा, सभी राष्ट्रों के लिए मुक्ति आएगी।

इसीलिए मैथ्यू सभी राष्ट्रों को शिष्य बनाने के आह्वान के साथ समाप्त होता है। क्यों? क्योंकि इस्राएल और आदम को जो कुछ करना था उसे यीशु ने पूरा कर दिया है, तौभी उन्होंने पाप के कारण ऐसा नहीं किया। तो, पुराने नियम की कहानी का पहला भाग जिसे मैथ्यू पूरा करता है वह है यीशु नया इज़राइल है।

वह इज़राइल की नियति को पूरा करता है। इस्राएल को सभी राष्ट्रों के लिए प्रकाश बनने के लिए जो करना चाहिए था, अब यीशु उसे पूरा कर रहे हैं। दूसरा, यीशु को एक नए मूसा के रूप में चित्रित किया गया है।

अब, मैथ्यू 2 को पढ़ने के लिए आपको बहुत ही असावधान पाठक बनना होगा और यह नहीं देखना होगा कि क्या हो रहा है। मैथ्यू 2 में यीशु को एक नए मूसा के रूप में कैसे प्रस्तुत किया गया है? फिर, वह कभी बाहर नहीं आता और उसे मूसा कहता है, लेकिन मैथ्यू 2 में जो कुछ आपको सोचने पर मजबूर करता है कि मैथ्यू ऐसा चाहता है... फिर, ये सभी सूत्र हैं। ऐसा लगता है जैसे मैथ्यू पुराने नियम से इन सभी धागों को, इन सभी कहानियों को इकट्ठा कर रहा है, उन्हें एक साथ जोड़ रहा है और दिखा रहा है कि कैसे वे यीशु मसीह में चरमोत्कर्ष पर पहुंचते हैं।

तो, यीशु नया इज़राइल है, लेकिन अब मैथ्यू कहना चाहता है कि वह नया मूसा भी है। मूसा ने जो अपेक्षा की थी और जो वह लोगों के सामने ला रहा था, वह उसे पूरा भी करता है और आदर्श भी है। मिस्र से लोगों को बचाने और मिस्र से लोगों को बचाने में, यीशु अब मूसा से भी बड़े पैमाने पर कुछ कर रहे हैं।

वह एक नया और महान मूसा है। मैथ्यू 2 में मैथ्यू इसे कैसे पूरा करता है? हाँ, बहुत अच्छा. ध्यान दें, कि यीशु मिस्र जाता है और फिर मैथ्यू उस पाठ को उद्धृत करता है।

यह इसलिये हुआ, कि भविष्यद्वक्ता की यह बात पूरी हो, कि मैं ने आपके पुत्र को मिस्र से बुलाया है। जो कि पुराने नियम के सन्दर्भ में, होशे, भविष्यद्वक्ता होशे का एक उद्धरण है। इस संदर्भ में, यह ईश्वर द्वारा इस्राएल को मुक्ति दिलाने की बात कर रहा है।

इस्राएल परमेश्वर का पुत्र था। निर्गमन की पुस्तक पढ़ें. परमेश्वर इस्राएल को अपना पुत्र कहता है।

तो, मूल रूप से उस पाठ में ईश्वर को मिस्र को बचाने और अपने पुत्र को इज़राइल से बाहर बुलाने का उल्लेख था। अब, यीशु को अपना पुत्र कहकर, यीशु को एक नए निर्गमन को लाने वाले एक नए मूसा के रूप में देखा जाता है। इस कहानी में और क्या है जो आपको यह सोचने पर मजबूर करता है कि कुछ अन्य चीजें भी हैं, जिनके अनुसार यीशु को मूसा के समान लेकिन उससे महान के रूप में चित्रित किया जा रहा है? हाँ बहुत अच्छे।

हाँ, आप इस तथ्य को नहीं भूल सकते कि यीशु का जन्म हुआ है और उसे एक विदेशी राजा द्वारा सभी बच्चों को मारने के प्रयासों से बचाया गया है। वापस जाओ और निर्गमन की पुस्तक पढ़ो। एक विदेशी राजा, फिरौन ने, इज़राइल से निपटने के प्रयास में, सभी शिशुओं को नष्ट करने की कोशिश की।

और इसलिए, यह ऐसा है जैसे, यह ऐसा है मानो मैथ्यू आपका ध्यान आकर्षित करने और आपको पुराने नियम से वापस जोड़ने की कोशिश कर रहा है। ईसा भी मूसा की तरह ही एक हैं। वह एक विदेशी राजा द्वारा उसे मारने के प्रयास से बच जाता है, ताकि जैसे, जिस तरह से मूसा ने अपने लोगों को बचाया और बचाया, अब यीशु अपने लोगों को एक बड़े तरीके से बचाने और बचाने के लिए आए हैं।

इसलिए, यीशु को एक नए मूसा के रूप में चित्रित किया गया है। वहाँ एक और है, संभवतः कई हैं। यीशु को राष्ट्रों की ज्योति के रूप में भी चित्रित किया गया है।

पुराने नियम के सबसे महत्वपूर्ण भविष्यवक्ताओं में से एक भविष्यवक्ता यशायाह है। और यशायाह जो करता है, वह फिर से इज़राइल की समस्या को संबोधित कर रहा है। इसराइल अब निर्वासन में है।

यशायाह को इस्राएल को निर्वासन में भेजे जाने की समस्या का समाधान करने के लिए लिखा गया था। और अब वह, अब यशायाह उस समय को संबोधित करता है जब एक दिन भगवान आएंगे और अपने लोगों को निर्वासन से बचाएंगे और उन्हें बहाल करेंगे। वह अपना राज्य स्थापित करेगा।

वह करेगा, वह करेगा, वह नई सृष्टि लाएगा। और इससे भी बढ़कर, परमेश्वर न केवल अपनी प्रजा इस्राएल को पुनर्स्थापित करेगा, बल्कि वह इस उद्धार में भाग लेने के लिए सभी राष्ट्रों से लोगों को लाएगा जो परमेश्वर अपने लोगों के लिए प्रदान करेगा। इसलिए, यशायाह महत्वपूर्ण है क्योंकि यशायाह ऐसे समय की आशा करता है जब अन्यजाति भी यरूशलेम में पूजा करने के लिए आएंगे।

वे इस मुक्ति का अनुभव करेंगे जो ईश्वर भविष्य में एक दिन प्रदान करेगा। अब, एक दिलचस्प अंश, और सबसे पहले, मैं आपको बुद्धिमान लोगों की कहानी की याद दिला दूँ। ये मैगी, सबसे पहले, वे महत्वपूर्ण गणमान्य व्यक्ति हैं।

बहुत महत्वपूर्ण गणमान्य व्यक्ति, एक विदेशी गैर-यहूदी देश के महत्वपूर्ण लोग। और वे तारे की रोशनी का अनुसरण करते हुए आते हैं। वे यीशु मसीह की पूजा करने के लिए यरूशलेम आते हैं।

खैर, अंततः बेथलहम, लेकिन वे यरूशलेम से शुरू होते हैं। तो फिर, आपके पास ये विदेशी गणमान्य व्यक्ति, ये महत्वपूर्ण व्यक्ति, विदेशी, गैर-यहूदी हैं, जो एक चमकते सितारे की रोशनी का अनुसरण करते हैं जो उन्हें यरूशलेम में लाता है जहाँ वे राजा की पूजा करते हैं और वे उन्हें सोने, लोबान और लोहबान के उपहार देते हैं। उस कहानी को ध्यान में रखें और यशायाह अध्याय 60 सुनें।

पुनः, यह यशायाह की भविष्यवाणी है, कि परमेश्वर एक दिन क्या करेगा जब वह अपने लोगों, इस्राएल को मुक्ति दिलाएगा, और उन्हें पुनर्स्थापित करेगा। वे निर्वासन में हैं, लेकिन एक दिन भगवान उन्हें बहाल करेंगे और अपने लोगों के लिए मुक्ति और एक नई रचना लाएंगे और अपना राज्य स्थापित करेंगे। यदि मैं इसे यहां पा सकता हूँ तो यह यशायाह अध्याय 60 है।

यह रहा। मैं बस कुछ छंद पढ़ंगा। उठो, चमको, क्योंकि तुम्हारा प्रकाश आ गया है और प्रभु की महिमा तुम पर चमक उठी है।

क्योंकि पृथ्वी पर अन्धियारा छा जाएगा, और प्रजा पर घोर अन्धकार छा जाएगा, परन्तु यहोवा तुम्हारे ऊपर उदय होगा, और उसका तेज तुम्हारे ऊपर प्रगट होगा। राष्ट्र, अन्यजाति राष्ट्र, तेरे प्रकाश की ओर और राजा तेरे भोर के प्रकाश की ओर आएंगे। अपनी आँखें उठाएँ और चारों ओर देखें।

वे सभी एक साथ इकट्ठे होते हैं। वे आपके पास आते हैं। तुम्हारा बेटा दूर से आएगा।

आपकी बेटी को नर्स की गोद में ले जाया जाएगा। तब तुम देखोगे और दीप्तिमान होगे। तुम्हारा मन आनन्दित होगा, क्योंकि समुद्र की प्रचुरता तुम्हारे पास आ जाएगी, और अन्यजातियों की धन-सम्पत्ति तुम्हारे पास आ जाएगी।

ऊँटों की भीड़ तुम्हें ढँक लेगी। मिद्यान, एपा और शेबा के जवान ऊँट आयेंगे। ये परदेशी राजा सोना और लोबान लाएंगे, और यहोवा की स्तुति का प्रचार करेंगे।

तो बस इतना ही काफी है। तो, मैथ्यू अध्याय 2 में क्या चल रहा है? इन राजाओं के साथ मैं राजा शब्द का प्रयोग करूँगा। वे तकनीकी रूप से राजा नहीं हैं, लेकिन वे प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं।

इन राजाओं, विदेशियों के साथ, तारे की इस उभरती रोशनी का अनुसरण करते हुए और यरूशलेम में आकर सोने और लोबान के उपहार दिए और यीशु की पूजा की, मूल रूप से मैथ्यू का कहना है, यशायाह 60 की यह प्रतिज्ञा बहाली पहले से ही यीशु मसीह के व्यक्तित्व में पूरी हो रही है। तो, राज्य चल रहा है। पुराने नियम के सभी वादे अब पूरे हो रहे हैं।

यह उस समय का वादा है जब भगवान, यशायाह द्वारा वादा किया गया था जब भगवान हस्तक्षेप करेंगे और अपने लोगों को बचाएंगे और उन्हें मुक्ति दिलाएंगे, एक नई रचना लाएंगे, अपना राज्य स्थापित करेंगे, जो पहले ही आ चुका है, और यह इस तथ्य से प्रदर्शित होता है कि आपके पास ये विदेशी हैं गणमान्य व्यक्ति, अन्यजाति, तारे की रोशनी से यात्रा करते हुए और यरूशलेम में पूजा करने आते हैं और सोने और लोबान के अपने समृद्ध उपहार देते हैं। तो मूल रूप से, यह यशायाह 60 की तरह है जिसे दोबारा बताया जा रहा है और यीशु मसीह के जन्म में क्रियान्वित और पूरा किया जा रहा है। तो फिर, यह सिर्फ एक अच्छी क्रिसमस कहानी नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य आपको पुराने नियम में वापस ले जाना है और आपको यह दिखाना है कि मैथ्यू की कहानी पुराने नियम की कहानी की निरंतरता है।

न केवल इज़राइल की कहानी और मूसा की कहानी, बल्कि भविष्यवक्ता यशायाह की उस समय की कहानी जब भगवान अपने लोगों को पुनर्स्थापित करेंगे। तो, क्या आप देख रहे हैं कि मैथ्यू क्या कर रहा है? हालाँकि, वह वास्तविक घटनाओं को रिकॉर्ड कर रहा है, लेकिन इसे इस तरह से तैयार कर रहा है ताकि आप तस्वीर देखने से न चूकें। इन बुद्धिमान लोगों के साथ जो कुछ हो

रहा है वह ऐसा कुछ नहीं है जो एक अच्छा जन्म दृश्य बनाता है, बल्कि इसका उद्देश्य यशायाह अध्याय 60 को याद करना है।

यहां यशायाह 60 की पूर्ति आती है। भगवान अब चरनी में इस शिशु में कार्य कर रहे हैं। परमेश्वर अब उस प्रतिज्ञा की गई पुनर्स्थापना को लाने के लिए कार्य कर रहा है जिसकी उसने यशायाह के माध्यम से भविष्यवाणी की थी।

जब राष्ट्र आएंगे और पूजा करेंगे और भगवान के उद्धार की उभरती रोशनी के जवाब में उपहार लाएंगे। तो, मैथ्यू का कथन यहाँ यीशु मसीह के जन्म की इस कहानी में है। ऐसे अन्य सूत्र हैं जिन्हें हम अध्याय 2 में खोल सकते हैं जो फिर से दिखाते हैं कि मैथ्यू, ऐसा लगता है जैसे उसने इन सभी पहलुओं को पुराने नियम से लिया है और उन सभी को एक साथ जोड़कर दिखाया है कि कैसे वे यीशु मसीह के व्यक्तित्व में अपना चरमोत्कर्ष पाते हैं।

आप वास्तव में मैथ्यू की कहानी तब तक नहीं पढ़ सकते जब तक कि आपका एक कान पुराने नियम से अभ्यस्त न हो। आपको दोनों को एक ही समय पर सुनना होगा। क्योंकि मैथ्यू सिर्फ एक अलग कहानी नहीं बता रहा है, वह एक ऐसी कहानी की निरंतरता बता रहा है जिसके बारे में वह मानता है कि आप पुराने नियम से जानते हैं।

ठीक है, जन्म कथा, विशेष रूप से अध्याय 2-4 और इसके कार्य के बारे में अब तक कोई अन्य प्रश्न? ठीक है, आइए आगे बढ़ते हैं, हम मैथ्यू में शिक्षण के पहले मुख्य खंड के बारे में संक्षेप में बात करना शुरू करेंगे। मैं उन सभी के बारे में बात करने का इरादा नहीं रखता, हम बस उनमें से कुछ पर बात करेंगे। लेकिन पहला अध्याय 5-7 में सुप्रसिद्ध पहाड़ी उपदेश है।

पहली चीज़ जो आपको माउंट पर उपदेश के बारे में समझने की ज़रूरत है, वह है इसके संदर्भ के बारे में थोड़ा समझना। आप केवल अध्याय 5 और श्लोक 1 को पढ़ना शुरू नहीं कर सकते हैं। इसके बजाय, आपको अधिक व्यापक रूप से समझने की आवश्यकता है कि क्या हो रहा है और मूल रूप से हमने अध्याय 2 में क्या बात की है। भगवान का परिवर्तनकारी राज्य अब आ गया है। यशायाह ने जिस राज्य की प्रतिज्ञा की थी, जिस मुक्ति की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की थी वह अब यीशु मसीह के रूप में आ गई है।

तो यह राज्य के लिए, या पर्वत पर उपदेश के लिए संदर्भ है। आपको यह समझने की आवश्यकता है कि पहाड़ी उपदेश इस तथ्य के जवाब में सिखाया जाता है कि यीशु मसीह पहले ही इस लंबे समय से प्रतीक्षित राज्य को ला चुके हैं। यह शक्तिशाली, सर्व-परिवर्तनकारी राज्य अब आ गया है और अब, इसके प्रकाश में, यीशु ने मैथ्यू 5-7 में शिक्षा देना शुरू किया है।

इससे आपके पहाड़ी उपदेश को समझने के तरीके में बड़ा अंतर आ जाता है। यह सिर्फ एक प्रासंगिक उपदेश नहीं है कि किसी ने अपने सिर के ऊपर से उपदेश देना शुरू कर दिया है। लेकिन यीशु मान रहा है, और मैथ्यू मान रहा है, कि अध्याय 5 तक जो कुछ भी हुआ है वह अध्याय 5-7 को समझने के लिए आवश्यक है।

अर्थात्, यीशु अब, पुराने नियम की पूर्ति में, मुक्ति लेकर आये हैं। अब उसने अपने लोगों को छुड़ाने और बचाने के लिए काम किया है। सर्वव्यापी और सर्वपरिवर्तनकारी, शक्तिशाली राज्य अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व में मौजूद और सक्रिय है।

और अब, इसके प्रकाश में, यीशु शुरू करते हैं, मैथ्यू ने मैथ्यू 5-7 में अपनी शिक्षा का पहला खंड, पहाड़ी उपदेश शुरू किया है। अब, हमें पहाड़ी उपदेश को कैसे समझना चाहिए? सबसे पहले, इसे समझने का मतलब यह है कि मैथ्यू 5-7 में मैथ्यू का पहाड़ी उपदेश मुख्य रूप से समाज को बदलने के लिए एक कार्यक्रम के रूप में नहीं है, न ही मैथ्यू मुख्य रूप से है... मैथ्यू के साथ व्यवहार करने का एक बहुत ही सामान्य तरीका क्या माउंट पर उपदेश का मुख्य उद्देश्य यह है कि जब आप इसे पढ़ें, तो आप केवल निराशा में प्रतिक्रिया करें। और आप कहते हैं, ऐसा कोई रास्ता नहीं है जिससे मैं इसे कभी रख सकूँ।

ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे कोई भी ऐसा कर सके। और फिर, उपदेश का उद्देश्य आपको मसीह में विश्वास करने और मुक्ति के लिए यीशु पर भरोसा करने के लिए प्रेरित करना है। तो, यह एक तरह से एक पैमाना रखने और यह देखने जैसा है कि आप उस पर खरे नहीं उतरते।

और इसलिए, एकमात्र विकल्प आपको यीशु के पास ले जाना है। और अपने उद्धार के लिए यीशु पर भरोसा करके, आपको एहसास होता है कि उपदेश आपको यह दिखाने के लिए है, मैं इसे स्वयं नहीं कर सकता। मैं इतना अच्छा जीवन नहीं जी सकता जो भगवान के उद्धार के योग्य हो।

तो, धर्मोपदेश केवल यह दिखाने के लिए है कि आप आगे नहीं बढ़ पाते हैं और आप कम पड़ जाते हैं, और उम्मीद है, फिर, आपको प्रेरित करेगा और आपको यीशु की कृपा पर भरोसा करने और मुक्ति के लिए मसीह के प्रावधान में विश्वास पर भरोसा करने के लिए प्रेरित करेगा। हालाँकि, संदर्भ से पता चलता है कि वास्तव में पहाड़ी उपदेश का उद्देश्य यह प्रदर्शित करना है कि भगवान के लोगों को कैसे जीना है। जो लोग परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर चुके हैं, जिन्होंने परमेश्वर के राज्य के शक्तिशाली, परिवर्तनकारी कार्य का अनुभव किया है, अब यह उस प्रकार का जीवन है जिसे उन्हें जीना चाहिए।

तो, मैं इसे मानता हूँ कि पहाड़ी उपदेश पूरे समाज के लिए सिर्फ एक नैतिकता नहीं है। यह केवल उन लोगों के लिए है जिन्होंने परमेश्वर के राज्य में प्रवेश किया है, जिन्होंने यीशु मसीह के साथ संबंध में प्रवेश किया है। न ही यह हमें यह दिखाने के लिए मापने वाली छड़ी के रूप में है कि हम कम रह गए हैं और हम असफल हो गए हैं।

नहीं, इसका मतलब एक नैतिकता के रूप में, एक शिक्षण के रूप में, निर्देश के रूप में है कि कैसे भगवान के लोग जिन्होंने उनके राज्य में प्रवेश किया है, जिन्होंने भगवान के राज्य की परिवर्तनकारी शक्ति का अनुभव किया है, उन्हें इसी तरह रहना चाहिए। तो, मुझे लगता है कि इसी तरह हमें सबसे पहले, पहाड़ी उपदेश को समझने की जरूरत है। यह परमेश्वर के लोगों के लिए शिक्षा है कि मैथ्यू और यीशु उम्मीद करते हैं कि परमेश्वर के लोग आज्ञाकारिता का पालन करेंगे क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के राज्य के परिवर्तन का अनुभव किया है।

वे परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर चुके हैं। उन्होंने अपने जीवन में परमेश्वर के शासन और शासन का अनुभव किया है। अब मैथ्यू 5-7 में पहाड़ी उपदेश में बताया गया है कि उन्हें उस पर कैसे प्रतिक्रिया देनी चाहिए और उसके आलोक में उन्हें कैसे जीना चाहिए।

अब उपदेश मैथ्यू 5-17 में एक बहुत ही दिलचस्प कथन से शुरू होता है जो कहता है, यीशु कहते हैं, मैं कानून को खत्म करने के लिए नहीं बल्कि इसे पूरा करने के लिए आया हूँ। और इस प्रकार का, एक अर्थ में, यह शेष उपदेश का एक प्रकार से परिचय है। अब यीशु का इससे क्या मतलब है? आमतौर पर, हमने इसका मतलब यह निकाला है कि यीशु कानून को खत्म करने के लिए नहीं बल्कि उसे पूरी तरह बनाए रखने के लिए आए थे।

अर्थात्, यीशु कानून का पालन करने और उसे पूरी तरह से बनाए रखने के लिए आया था। उन्होंने कानून के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता में प्रतिक्रिया देने का मॉडल तैयार किया। और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि मैथ्यू यही कह रहा है।

जब वह कहते हैं, यीशु कानून को खत्म करने के लिए नहीं बल्कि उसे पूरा करने के लिए आए थे, तो हमें पूरा शब्द को उसी तरह समझने की जरूरत है जैसे मैथ्यू ने क्रिसमस की कहानी में इसका इस्तेमाल किया था जिसके बारे में हम बात कर रहे थे। पूर्ति का विचार यही है। ऐसा नहीं है कि यीशु कानून का पूरी तरह से पालन करने के लिए आये थे, हालाँकि मैं सहमत हूँ कि उन्होंने ऐसा किया, लेकिन मैथ्यू इस पर जोर नहीं दे रहा है।

जब मैथ्यू कहता है कि यीशु इसे पूरा करने के लिए आए थे, तो विचार यह है कि पूर्ति का मतलब है कि यीशु ही उस चीज़ का लक्ष्य है जिसकी ओर कुछ इशारा किया गया था। तो, इसका कानून से क्या मतलब है, यीशु की शिक्षा, मैथ्यू क्या कह रहा है जब यीशु कहते हैं, मैं कानून को खत्म करने के लिए नहीं बल्कि इसे पूरा करने के लिए आया हूँ, यीशु की शिक्षा ही वह सच्चा लक्ष्य है जिसकी ओर कानून इशारा कर रहा था। यीशु की शिक्षा ही कानून का सच्चा उद्देश्य है।

तो, यीशु का मुद्दा ऐसा नहीं है, और मैथ्यू का मुद्दा ऐसा नहीं है, इसलिए हमें मोज़ेक कानून का शब्दशः पालन करना होगा, बल्कि इसके बजाय, यीशु कह रहे हैं कि अब पहाड़ी उपदेश में मेरी शिक्षा वास्तव में सच्चा इरादा और सच्चा है कानून का लक्ष्य। इसमें यीशु की शिक्षा ही वह लक्ष्य है जिसकी ओर कानून इशारा कर रहा था, यीशु को इसे पूरा करने वाला कहा जा सकता है। अब, मैथ्यू के सुसमाचार के अंत में फिर से आगे बढ़ने के लिए, तथाकथित, महान आयोग को याद रखें? यीशु अपने शिष्यों को क्या करने के लिए कहते हैं? बपतिस्मा देना, सभी राष्ट्रों के लोगों को शिष्य बनाना, उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा देना, और उन्हें क्या सिखाना? मूसा का कानून? राष्ट्रों को सिखाने के लिए उसके शिष्य क्या हैं? कानून? दस आज्ञाएँ, बलिदानों के नियम, वे सभी नियम जो आप मूसा में पाते हैं, मैथ्यू क्या कहता है? यीशु वहाँ वह सब कुछ सिखाने के लिए है जिसकी यीशु ने उन्हें आज्ञा दी है।

दूसरे शब्दों में, ईश्वर का केंद्र, अपने लोगों के लिए ईश्वर की इच्छा की अभिव्यक्ति अब मूसा का कानून नहीं है, बल्कि अब कुछ बड़ा आ गया है, मूसा से भी बड़ा एक आ गया है, यीशु मसीह। और अब अपने लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा का केंद्र अब मूसा के कानून में नहीं पाया जाता

है, यह यीशु मसीह के व्यक्तित्व और शिक्षा में पाया जाता है। इसलिए सुसमाचार के अंत में, मैथ्यू कहता है, जाओ सभी राष्ट्रों के लोगों को शिष्य बनाओ, और उन्हें वह सब करना सिखाओ जो मैंने तुम्हें आदेश दिया है।

क्योंकि यीशु की शिक्षा पुराने नियम के कानून की ओर इंगित करने वाली सच्ची पूर्ति और लक्ष्य है। तो, पहाड़ी उपदेश को इस रूप में देखा जाना चाहिए कि यह अपने लोगों के लिए भगवान की इच्छा है। उन लोगों के लिए जिन्होंने यीशु मसीह में अपना विश्वास रखा है, जिन्होंने मसीह के साथ संबंध बनाया है, राज्य में प्रवेश किया है, और अपने जीवन में भगवान के शासन का अनुभव किया है, राज्य की परिवर्तनकारी शक्ति, उन्हें इस तरह से प्रतिक्रिया देनी है, बल्कि मोज़ेक कानून की तुलना में।

अब याद रखें, आप देख सकते हैं कि यहां कुछ हो रहा है। बहुत पहले सेमेस्टर की शुरुआत में, हमने एक सवाल उठाया था, और वह यह है कि, अधिकांश यहूदी समूह यह सवाल पूछ रहे होंगे कि भगवान के लोग होने का क्या मतलब है? परमेश्वर के लोगों का पहचान चिह्न क्या है? अधिकांश यहूदियों ने कई चीजों के साथ प्रतिक्रिया व्यक्त की होगी, लेकिन उनमें से एक मूसा के कानून का पालन करना होगा। और अब यीशु आते हैं और कहते हैं, नहीं, इसके बजाय यह मेरी आज्ञाकारिता है।

मेरा शिक्षण वास्तव में मोज़ेक कानून की ओर इशारा कर रहा था। तो, यह अब मोज़ेक कानून नहीं है। अब सब कुछ यीशु मसीह के व्यक्तित्व और शिक्षा के इर्द-गिर्द घूमता है।

और पर्वत पर उपदेश इसी बारे में है। यह यीशु की शिक्षा का एक उदाहरण है और इस राज्य में प्रवेश करने वाले परमेश्वर के लोगों के रूप में जीने का क्या मतलब है, जिन्होंने इस लंबे समय से प्रतीक्षित राज्य का अनुभव किया है, जिसका वादा पुराने नियम में किया गया था, और अब मसीह के व्यक्तित्व में पूरा हुआ है। बुधवार को हम माउंट पर उपदेश के कुछ और विवरण देखेंगे।

मैं डॉ. डेविड मैथ्यूसन न्यू टेस्टामेंट हिस्ट्री एंड लिटरेचर, लेक्चर 7, द इंटीडक्शन टू मैथ्यू प्रस्तुत कर रहा हूँ।